405 P
H 73

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 405

वन्देमातरम्

गांधी का तोपखाना

तथा

सत्याग्रह का पैगाम

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

हम अपने मुल्क की खातिर खुशी से जेल जायेंगे।
मुसीबत आयगी जो कुछ उन्हें सर पर उठायेंगे ॥

संग्रहकर्ता व प्रकाशक
श्री० आर० शर्मा बुकडिपो नई सड़क देहली

मार्तण्ड प्रेस देहली में छपा मूल्य -)

भजन नं० १

छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम ।
हम गरीबों के गले का हार वन्देमातरम ॥ १ ॥
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता जरूर ।
कान में पहुंचा जहां झनकार वन्देमातरम ॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर ।
आज तो चिल्ला रहा संसार वन्देमातरम ॥ ३ ॥
जेल में चक्की घसीटें भूख से हों मर रहा ।
उस समय भी बक रहा संसार वन्देमातरम ॥ ४ ॥
मौत के मुंह पर खड़ा है कह रहा जल्लाद से ।
भोंक दे सीने में तू तलवार वन्देमातरम ॥ ५ ॥
डाक्टरों ने नब्ज देखी सर हिलाकर कह दिया ।
होगया इसको तो है आजार वन्देमातरम ॥ ६ ॥
ईद होली और दशहरा शबरात से भी सौगुना ।
है हमारा लाडला त्यौहार वन्देमातरम ॥ ७ ॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा ।
फैसला होगा सरे दरबार वन्देमातरम ॥ ८ ॥

चरखा ३

चलादो चर्खा हर एक घर में,
वे चर्खे तब तुम हिला सकोगे ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 405
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA

बंधा तभी सिलसिला रुकेगा,
उन्हें कबड्डी खिला सकेंगे ॥
हमारे चरखे में ऐसा फन है,
जो आज कल की मशीनगन है।
वो मेनचेस्टर औ लंकाशायर,
का ओत इससे किला सकेंगे ॥
रुई न भारत की हो रवाना,
बने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तरह से विदेशी वाणिज को,
आप फांसी दिला सकेंगे ॥
न करें विदेशी का जो सहारा,
शरीर चाहे रहे उघारा।
बचे बहत्तर करोड़ रुपया,
तब अपने बच्चे जिला सकेंगे ॥
भिखारी भाई गले लगा के,
स्वदेश का तुम सबक पढ़ाके।
विदेशी चीजों को दो हटाके,
तो चैन बन्शी बजा सकेंगे ॥

देश भक्त का प्रलाप ४

हमारा हक है हमारी दौलत,
किसी के बाबा का डर नहीं है।

मुल्क भारत वतन हमारा,
किसी की खाला का घर नहीं है ॥
हमारी आत्मा अजर अमर है,
निसार तन मन स्वदेश पर है ।
है चीज क्या जेलोगन मशीनें,
कजा का भी हमको डर नहीं है ॥
न देश का जिसमें प्रेम होवे,
दुखों के दुख से जो दिल न रोवे ।
खुशामदी बनके शान खोवे,
वो खर है हरगिज बशर नहीं है ॥
हकों को अपने ही चाहते हैं,
न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं ।
तुझे तो यह खुदगरज किसी की,
भलाई मद्दे नजर नहीं है ॥
हमारी नस नस का खून तूने,
बड़ी सफाई के साथ चूसा ।
है कौनसी तेरी पालिसी वह,
कि जिसमें धोखा जहर नहीं है ॥
बढ़ाया तूने है लूं उसी का,
है तेरी रग रग में अन्न जिसका
बतादे बेदर्द तू ही हक से,

सितमे ये है या कहर नहीं है ॥

जो बेगुनाहों को है सताता,

कभी न वह सुख से भी बैठ पाता।

बड़े बड़े मिट गये सितमगर,

क्या इसकी तुझको खबर नहीं है ॥

संभल संभल अब भी ओ लुटेरे,

है तेरे पापों का अन्त आया ।

कि जुल्म करने में तूने जालिम,

जरा भी रक्खी कसर नहीं है ॥

गजब है हम बेकसों की आहें,

जमीन और आसमां हिलादें ।

गलत है समझो कभी जो समझे,

कि आह में कुछ असर नहीं है ।

राष्ट्रपति जवाहरलाल

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने ।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो समझाया वीर जवाहर ने ॥ १ ॥
वह लाल जी मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का ।
सोते भारत को हठ करके जगवाया वीर जवाहर ने ॥ २ ॥
अंगरेजों की मृगतृष्णा में, लटके थे सब भारतवासी ।
पूरी आजादी का मंत्र सिखलाया वीर जवाहर ने ॥ ३ ॥

हे बरसों से जिन्हों दिल कमजोरी दूर भगादी सब ।
इस रग रग में खूं आजादी का दौड़ाया वीर जवाहर ने ॥ ४ ॥
जानी है राजनीति उसने छानी है खाक विदेशों की ।
पूर्ण स्वतन्त्रता का मारग दिखलाया वीर जवाहर ने ॥ ५ ॥
खूं चूसत जमींदार करते हैं जुलम मजूर किसानों पर ।
बन साथी दोनों का धीरज धरवाया वीर जवाहर ने ॥ ६ ॥
हिन्दू मुसलिम सिक्ख जैन ईसाई पारसी भाई भाई हैं ।
सब ऊंच नीच का विषम भेद मिटवाया वीर जवाहर ने ॥ ७ ॥
इक जोशल आग धधकती है आजादी की उसके दिल में ।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल चमकाया वीर जवाहर ने ॥ ८ ॥
नवयुवक करोड़ों भारत के भूले थे भोग विलासों में ।
युवकों की शक्ति को एकदम उकसाया वीर जवाहर ने ॥ ९ ॥
आदर्श चरित से अपने युवकों का है सम्राट् बना ।
आजादी का ऊंचा झंडा लहराया वीर जवाहर ने ॥ १० ॥
बिजली है वाणी उसकी जादू है आँखों में उसकी ।
देखा जिसको बस पल भर में अपनाया वीर जवाहर ने ॥ ११ ॥
गांधी जब आशिष दे बोले सुन क्लर्क बनूंगा मैं तेरा ।
तब सेहरा राष्ट्रपति का सिर बंधवाया वीर जवाहर ने ॥ १२ ॥
लखकर "प्रकाश" यह भारत का अन्तरतल से डूबी है दुनियां ।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में मुसकाया वीर जवाहर ने ॥ १३ ॥

देशभक्त वीर की गर्जना

तेरी इस जुल्म की हस्ती को ऐ जालिम मिटादेंगे ।
जुबां से जो निकालेंगे वही करके दिखा देंगे ॥
भड़क उट्ठेगी जब सीनए आज़ांकी दू दू आतिश ।
तो हम एक सर्द आह भरकर तुझे जालिम जलादेंगे ॥
हमारे आह व नाले को तुम ऐ सूद न समझो ।
जो हम रोने पै आयेंगे तो एक दरिया बहा देंगे ॥
हमारे सामने सख्ती है क्या इन जेलखानों की ।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखादेंगे ॥
हमारी फ़ाके मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी ।
निशां तेरा मिटा देंगे तुझे जब बद्दुआ देंगे ॥
हजारों देशभक्त अब कौमी परवाने हैं जिन्दा में ।
हम उनके वास्ते अब माल जर अपना लुटादेंगे ॥
कुछ इसमें राज़ था मुद्दत से जो खामोश बैठे थे ।
हम अब करने पै आये हैं तो कुछ करके दिखादेंगे ॥
अगर कुछ भेंट आज़ादी की देवी हमसे माँगेगी ।
समझ कर हम अहे किस्मत अब अपने सर चढ़ादेंगे ॥
नहीं मंजूर अब इज्जत हमें सरमायेदारों की ।
बना कर शाह नेहरू को सिंहासन पर बिठा देंगे ॥

—:::—

गजल आजादी का पैगाम

आबरू पर मुल्क की हम सब फिदा हो जायंगे।
काँग्रेस पर हर तरह से हम फिदा हो जायंगे।
हासिल आजादी करेंगे जिस तरह भी हो सके।
देख लेना दास के हम नक्शे कदम हो जायंगे॥
क्यों हमें कमजोर समझे हो निहत्था जानके।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला हो जायंगे॥
आग से मत खेलना हम हैं वो गोले आग के।
गर भड़क उठे तो पैगामे कजा हो जायंगे॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है।
आगया है वक्त अब नाले रसाँ हो जायंगे॥
माल की होगी जरूरत तो लुटा देंगे जोहर।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब गदा हो जायंगे॥
इक नये अंदाज से किश्ती चलेगी मुल्क की।
और जवाहरलाल नेहरू ना खुदा हो जायंगे॥
आने वाला वक्त है लो देख लेना दोस्तो।
आज तो आजिज हैं कल यहाँ क्या से क्या हो जायंगे॥

बजाज भाई ध्यान दें

हम अपने मुल्क की खातिर खुशी से जेल जायंगे।
मुसीबत आय गी जो कुछ उन्हें सर प उठायंगे

न मानेंगे न मानेंगे करेंगे कौम की खिदमत ।
विदेशी माल से हर फर्द को नफरत दिलाएंगे ॥
हमारी घोंटलो गर्दन हजारों गालियाँ दे लो ।
तुम्हें हम हाथ जोड़ेंगे खुशी से मार खायेंगे ॥
हम इस वतन के दोस्तो मासूम बच्चे हैं ।
सतालो जिस कदर चाहो न हम गर्दन उठायेंगे ॥
हम अपने फर्ज को अंजाम देंगे जान जब तक है ।
किसाना मुलक की हालत को हर एक को सुनायेंगे ॥
लिये फिरते हैं सर अपने वतन की कौम की खातिर ।
जरूरत गर पड़ेगी जान पर भी खेल जायेंगे ॥
गिरे जिस जा पसीना आपका हम खूं बहायेंगे ।
ये रक्खें याद दिल में सताये जो हमें "सूरज" ।
खुदा के सामने जाकर के क्या वह मुंह दिखायेंगे ॥

वीर हृदय

देश की खातिर मेरी दुनियाँ में गर तौकीर हो ।
हाथों में हो हथकड़ी पांवों पड़ी जंजीर हो ॥
आंखों की खातिर तीर हो मिलता गले शमशीर हो ।
इससे भी बढ़कर कोई दुनियां में गर तौकीर हो ॥
मर कर भी मेरी जान पर जहमत किला तामीर हो ।
मेरी खातिर खोद कर दोजख नया तामीर हो ॥

सूली मिले फांसी मिले या मौत दामनगीर हो
मंज़ूर हो, मंज़ूर हो, मंज़ूर हो, मंज़ूर हो ॥

असहयोग

तब्दील सखत मेंह को रफ्तार न होगी ।
गर क़ौम असहयोग पर तैयार न होगी ॥

बन जायंगे हर शहर में जलियान वाले बाग ।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ॥

ये जेलखाने टूट कर अब और बनेंगे ।
इसमें तमाम क़ौम गिरफ्तार न होगी ॥

सौदाई हैं हम वतन के लोहे की बेड़ियां ।
सोने के ज़ेवरों में ये झँकार न होगी ॥

दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे ।
इन हाथों में बन्दूक या तलवार न होगी ॥

कुछ मिल गये हैं ऐसे मुसलमान व हिन्दू ।
बस अब नमोज तस्वीद व ज़िन्नार न होगी ॥

हम ऐसी हकूमत को मिटा देवेंगे बिल कुल ।
गम में हमारे जो कभी गमख्वार न होगी ॥

— — :: — —

बुज़दिलों हो को सदा मौत से डरते देखा ।
जो कि सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा ॥
मौत से वीर को हमने नहीं डरते देखा ।

मक़तल मौत पे भी खेल ही करते देखा ॥
मौत एक बार जब आना है तो डरना क्या है ।
वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद ।
हमारा क्या है अगर हम रहें न रहें ॥

खादी का डंका

खादी का डंका आलम में,
बजवा दिया गाँधी बाबा ने ।
मैनचेस्टर लंकाशायर को,
हिलवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
देशी वस्त्रों को पहनो तुम,
छोड़ विदेशी कपड़ों को ।
यह पाठ भली विधि से हमको,
पढ़वा दिया गांधी बाबा ने ॥
देशी धोती गान्धी टोपी,
खादी का कुरता और धोती ।
ओढ़ना बिछौना खादी का,
करवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
मनहूस विदेशी कपड़ों की,
जलवादी भारत की होली ।
खुश चलन स्वदेशी खादी का,

चलवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
औ पहन साड़ियां परदेशी,
चलती थीं भारत की नारी।
खादी से उनका सुन्दर तन,
सजवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
सिर से पैरों तक है खादी,
खादी के श्वेत समुन्दर से।
है आज जमाने के दिल को,
दहला दिया गाँधी बाबा ने ॥
खादी की शक्ती बम में भी,
है अधिक काम करने वाली।
खादी का गौरव भारत को,
दिलवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
अब त्यागो विदेशी वस्त्रों को,
पहनो "दिनेश" देशी खादी।
खादी का झँडा भारत में,
गड़वा दिया गाँधी बाबा ने ॥

सरफरोशी की तमन्ना १२

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है अब जोर कितना बाजुये कातिल

बरं राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज्जते सहरान वर्दी दूर ये मंजिल में है ॥
आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां ।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है ॥
आज फिर मकतल में कातिल कह रहा है बार २ ।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार ।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैर की महफिल में है ॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़ ।
सिर्फ मिटजाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है ॥

वीर गर्जना १३

भारत के वीर जागो बदला है अब जमाना ।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है बनाना ॥
मत बुजदिलों को हरगिज तुम पास दो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वतन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥

——(:::)——

शहीद गर्जना १४

भारत न रह सकेगा हरगिज गुलामखाना ।
आजाद होगा होगा आता है वह जमाना ॥
खूं खौलने लगा है हिंदोस्तानियों का ।
कर देंगे जालिमों का अब बंद जुल्म ढाना ॥
कौमी तिरंगे झंडे पर जां निसार अपनी ।
हिंदू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बनकर न हम रहेंगे ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जेल औ दमन की त्यारी ।
इक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

गजतल

भारत का सिक्का दुनिया पर बिठला दिया भारत वीरों ने ।
बल पूरा आत्म शक्ति का दिखला दिया भारत वीरों ने ॥
बाणों से छाती छिदवा कर खंजर से गर्दन कटवा कर ।
एक हिंदू धर्म पर मर मिटना सिखला दिया भारत वीरों ने ॥
तुम फौरन आग में जल जाओ पर शील धर्म को मत छोड़ो ।
सतियों को जिन्दा जलवा कर बतला दिया भारत वीरों ने ॥
न राम ने ताज की चिंता की ना भरत ने राज की ख्वाहिश की ।
ठोकर से तख्त अजुध्या को ठुकरा दिया भारत वीरों ने ॥

एक धर्म के कारण प्राण तजे संसार के सारे कष्ट सहे ।
सत बात के कारण बच्चों को चिनवा दिया भारत वीरों ने ॥
जिन शक्तिशाली वीरों की शक्ति से दुनियाँ काँप गई ।
सिर उनका अपने चरणों में झुकवा दिया भारत वीरों ने ॥
है "आफताब" इस दुनिया में कुहराम हुआ घर २ घर था ।
अब रण स्थल में खञ्जर को चमका दिया भारत वीरों ने ॥

फैशन का डंका

(तर्ज—योरुप वालों ने)

फैशन का डङ्का भारत में बजवा दिया योरुप वालों ने ।
घर घर में ला तँगदस्ती को बिठला दिया योरुप वालों ने ॥
खद्दर पर टैक्स लगाया है रेशम सस्ता बिकवाया है ।
बिलकुल मलमल में सबका दिल लुभवा दिया योरुप वालों ने ॥
नर नारी फैशन के मारे क्या छोटे और बड़े सारे ।
फैशन का दीवाना सबको बनवा दिया योरुप वालों ने ॥
फैशन से ऐनक चलती है हाथों में घड़ियाँ सजती हैं ।
आँखों पै चश्मा हर एक के लगवा दिया योरुप वालों ने ।
फैशन के साहब मतवाले हैं पतलून कोट में छल डाले ।
और उलट कैप को सबके सिर रखवा दिया योरुप वालों ने ॥
फैशन ने हवा चलाई है घर घर में आग लगाई है ।
भारत का बेड़ा गारत कर डुबवा दिया योरुप वालों ने ॥

तू खंजर जुल्म का जालिम चलाले और थोड़े दिन।

तू खंजर ज़ुल्म का ज़ालिम चलाले और थोड़े दिन ।
गरीबों बे गुनाहों को सताले और थोड़े दिन ॥

क़सम तुमको मेरे सर की क़सर बाकी न रह जावे ।
न मौक़ा फ़िर मिले ऐसा जमाले और थोड़े दिन ॥

कहीं प्यासी न रह जावे तेरी तलवार ए क़ातिल ।
हमारा खून पानी सा पिलाले और थोड़े दिन ॥

न अरमान कुछ रहे बाकी न हसरत दिल में रह जावे ।
अभी शमशीर के जौहर दिखाले और थोड़े दिन ॥

मशाले नील का टीका रहे पहचान तेरी भी ।
हमें घर में हमारे ही मिटाले और थोड़े दिन ॥

चला अब हिन्द से जल्दी भला कब आयगा फ़िर फ़िर ।
आखरी दावतें अब तो उड़ाले और थोड़े दिन ॥

न होगा हिन्द में तू ही हकूमत भी न यह होगी ।
"वियोगी" दाम चमड़ के चलाले और थोड़े दिन ॥

पता—हर एक बुकसेलर के पास मिलती है